Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 12-07-2021, Accepted: 25-07-2021, Published: 12-08-2021
Volume 2, Issue 2, 2021, Page No. 08-13

शैक्षिक और सांस्कृतिक समन्वय की दृष्टि और मध्यकालीन समाजव्यवस्था

डॉ. सतीश कुमार पांडेय
डीन (शिक्षा संकाय) प्राचार्य, शिक्षा महाविद्यालय मैसूर, कर्नाटक, भारत

सारांश
प्राचीनकालीन शिक्षा व्यवस्था मध्यकाल में आते आते अत्यंत परिवर्तित हो गई थी, क्योंकि राज्य की अव्यवस्थित राजनैतिक स्थिति का प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ा। भारत के इतिहास में मध्यकाल राजनैतिक उथल पुथल का काल रहा। एक के बाद एक क्रमशरू गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोदी तथा मुगल वंशों का उदय और अंत हुआ। मुगल शासक पूर्ण सत्ता संपन्न था। सम्राट का विरोध करने का साहस किसी में भी ना था।
शासक साम्राज्य का प्रधान होता था और सम्राट की आज्ञा प्रमुख होती थी। सम्राट किसी के भी परामर्श को मानने के लिए बाध्य नही था। वह सभी निर्णय स्वयं ही लेता था। मध्यकालीन शासकों ने अपनी नीतियों का अनुसरण करते हुए अपने साम्राज्य का विस्तार किया। मध्यकालीन राजनीतिक स्थिति संघर्षों से आक्रांत तथा अव्यवस्थित थी। राजनीतिक परिवेश अत्यधिक संघर्ष पूर्ण, अव्यवस्थित, अशांत, नैतिक पतन, व्यक्तित्वविहीनता, अहंवादी नीति, विलासिता व असहिष्णुता का युग रहा है।
मध्यकालीन सभी शासक एकतंत्रीय और स्वेछाचारी थे। इस स्वेछाचारिता का प्रभाव शिक्षा नीति पर भी पडा। शिक्षा के प्रति सभी शासकों की रीति नीति अलग रही जो उनकी मृत्यु के बाद समाप्त हो जाती थी। यदि किसी शासक की शिक्षा के प्रति अधिक रुचि रही तो उनके शासन काल में शिक्षा की पर्याप्त प्रगति होती थी, किन्तु यदि शासक की रुचि शिक्षा के प्रसार में नही होती थी, तो शिक्षा की दशा दयनीय होती जाती थी। इसप्रकार मध्यकालीन शिक्षा पूरी तरह शासक वर्ग की रुचि पर आधारित थी।
शिक्षा का महत्व, नैतिक शिक्षा का प्रसार, शिक्षा की प्रगतिशील दिशा का अपना कोई स्वातंत्र्य अस्तित्व नही था। अतरू संक्षेप में कह सकते हैं कि मध्यकालीन शिक्षा का संख्यात्मक और गुणात्मक विकास अवरुद्ध रहा। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि उसने भारतीय जनसाधारण को सैकड़ों वर्षों तक शिक्षित करने का कार्य किया।

मूल शब्द: मध्यकालीन शिक्षाप्रणाली, प्राचीन शिक्षाव्यवस्था, शिक्षा का महत्व, शिक्षा का विकास।

प्रस्तावना

भारत विश्व का अत्यंत प्राचीन चिन्तनशील देश रहा है ,जिसने समय–समय पर अपने सामाजिक जीवन का परिष्कार कर युगानुरूप अपने आप परिवर्तित करते हुए अपने मूल को कभी भी विस्मृत नहीं किया । अपनी इसी विशेषता के कारण हमने विगत 5000 वर्षों में अनेकानेक विषम परिस्थितियों से गुजरते हुए भी अपना अस्तित्व बनाये रखा है ,और आज हम निरंतर विकासमान हैं। भारतीय इतिहास का प्रत्यावलोकन करने पर यह पता चलता है कि मध्यकाल में हमारे समाज ने सर्वाधिक संक्रमण देखा और भोगा।

इस काल में हमारा शिक्षा ,समाज ,संस्कृति और राजनीति सब कुछ प्रभावित हुआ ,जिसका प्रभाव आज भी हमारे समाज पर देखा जा सकता है । शिक्षा और सामाजिक संक्रमण की दृष्टि से यह युग बहुत ही महत्वपूर्ण माना जा सकता है, हिन्दी साहित्य के इतिहास में पूर्वमध्यकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा से अभिहित किया गया है ,तो उत्तर मध्यकाल को अलंकार काल के रूप में जाना जाता है । इस्लाम का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना थी ,जिसने हमें और हमारे जीवन को बहुविध प्रभावित किया ।

भारत की समृद्धि से आकृष्ट होकर मुस्लिम शासकों ने आठवी शताब्दी से भारत पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। भारत पर मुस्लिम शासकों का सबसे पहला आक्रमण सन् 612 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में हुआ। इसके बाद लगभग 300 वर्षों तक भारत पर कोई आक्रमण नही हुआ। 10वीं शताब्दी के अंत में महमूद गजनवीं ने भारत पर सत्रह बार आक्रमण किया। पुनरू बारहवीं शताब्दी के अंत में मुहम्मद गोरी ने कई आक्रमण किए और पृथवीराज चौहान को हरा कर भारत में अपना राज्य स्थापित किया। इसके बाद अनेकों मुस्लिम शासकों ने आक्रमण किया। वस्तुतरू औरंगजेब की मृत्यु तक प्रायरू सम्पूर्ण भारत देश में मुगल शासकों का साम्राज्य रहा। मुस्लिम शासकों के कारण भारत में अनेकों क्षेत्रों में परिवर्तन हुए। शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता ना रहा और नवीन शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। जिसे मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली व मुस्लिम शिक्षा प्रणाली भी कहा जाता है। मुगल शासकों ने भारत की प्राचीन शिक्षा को समाप्त करके नालंदा और विक्रमशिला जैसे उच्च शिक्षा केंद्रों को नष्ट कर दिया।

मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था से पूर्व वैदिक शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए डॉ अल्तेकर ने लिखा है कि "ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति तथा राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण और प्रसार प्राचीन भारत में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य तथा आदर्श थे।"[1]

इसके विपरीत मध्यकाल में आदर्श शिक्षा व नैतिक शिक्षा के दर्शन होना दुर्लभ थे। सर्वत्र अनैतिक आचरण और अशान्ति व्याप्त थी। डॉ नगेन्द्र ने तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है– "मुगलवंश की राजनैतिक प्रतिभा नष्ट हो चुकी थी। अतरू पुर में क्षुद्र द्वेष और प्रणय की लीला चल रही थी। राज्य के उत्तराधिकारी उचित शिक्षा और संस्कार के अभाव में विलासी, निवीर्य एवं व्यक्तित्वहीन हो गए थे.. ।"[2]

अत प्राचीकालीन शिक्षा व्यवस्था मध्यकाल में आते आते अत्यंत परिवर्तित हो गई थी, क्योंकि राज्य की अव्यवस्थित राजनैतिक स्थिति का प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ा। प्रस्तुत शोध लेख में अब हम मध्यकालीन समाज की राजनीतिक स्थिति एवं वातावरण का अध्ययन करेंगें उसके बाद मध्यकालीन समाज में शिक्षा के विकास व स्वरूप का विस्तार से अध्ययन करेंगे। भारत के इतिहास में मध्यकाल राजनैतिक उथल पुथल का काल रहा। एक के बाद एक क्रमशरू गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोदी तथा मुगल वंशों का उदय और अंत हुआ। मुगल शासक पूर्ण सत्ता संपन्न था। सम्राट का विरोध करने का साहस किसी में भी ना था। शासक साम्राज्य का प्रधान होता था और सम्राट की आज्ञा प्रमुख होती थी। सम्राट किसी के भी परामर्श को मानने के लिए बाध्य नही था। वह सभी निर्णय स्वयं ही लेता था। मध्यकालीन शासकों ने अपनी नीतियों का अनुसरण करते हुए अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

डॉ नगेन्द्र ने मध्यकालीन शासकों के साम्राज्य की इसी स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा– " सम्राट का अपना व्यक्तित्व साम्राज्य के लिए असीम महत्व रखता था। ये लोग अपने मंत्री आप थे। इस भयंकर व्यक्तिवादी राजतन्त्र का परिणाम यह हुआ कि मुगल शासक न तो भारतीयों को एक राष्ट्र में परिणत कर पाया और न सशक्त स्थाई राज्य ही प्रतिष्ठित कर पाया। जनता को किसी प्रकार की आर्थिक स्वाधीनता नहीं थी, उसे अपने न्याय विचार या व्यक्तिगत स्वातंत्र्य का कोई अधिकार नहीं था, राजनीतिक अधिकार तो उस समय अकल्पनीय थे। शासन पूर्णतरू व्यक्ति की इच्छा पर था जिसके लिए वैधानिक नियमों का कोई महत्व न था। विद्रोह और क्रांति का ही भय था। इन सम्राटों की शासन प्रणाली स्पष्ट रूप से सामंतीय थी।"[3]

साम्राज्य की इसी सामंतीय शासन प्रणाली के फलस्वरूप साम्राज्य में अशान्ति, संघर्ष एवं अव्यवस्था की स्थापना हो गई थी। पंडित राजबली पाण्डेय ने मध्यकालीन सामंतीय व्यवस्था का वर्णन करते हुए कहा "मध्ययुग में राजनीतिक विश्रखलता, अनिश्चितता और अरक्षा के करण इस सामंती व्यवस्था को अधिक प्रोत्साहन मिला। परस्पर युद्ध और संघर्ष के करण सेनाओं का आवागमन लगा रहता था और लूटमार हुआ करती थी।"[4]

मध्ययुग के मुगल साम्राज्य की दयनीय दशा का लाभ अंग्रेजों एवं फ़्रांसीसियों ने भी उठाया और धीरे धीरे अंग्रेजों ने मुगल साम्राज्य पर अपना अधिपत्य स्थापित करना प्रारंभ किय। श्यामसुंदर दास ने हिन्दी साहित्य में मुगल साम्राज्य पर अंग्रेजों के अधिकार का वर्णन इस प्रकार किया–"बंगाल में सिराजुदौला की निर्बलता से उन्होंने पूरा लाभ उठाया सन् 1757 में प्लासी के युद्ध में सिराजुदौला को हराकर क्लाइव ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नीव डाली। मराठों और सिक्खों की शक्तियां उनकी उन्नति में प्रतिरोध उपस्थित करती थीं। लार्ड वैलेजली के समय में मराठे उत्तर भारत में शक्तिहीन हो गए थे और महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद सिक्खों की शक्ति भी क्षीण पड़ गई। सन् 1898 के सिक्ख युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई और सिक्ख साम्राज्य का अंत हो गया।"[5]

मध्यकालीन राजनीतिक स्थिति संघर्षों से आक्रांत तथा अव्यवस्थित थी। राजनीतिक परिवेश अत्यधिक संघर्ष पूर्ण, अव्यवस्थित, अशांत, नैतिक पतन, व्यक्तित्वविहीनता, अहंवादी नीति, विलासिता व असहिष्णुता का युग रहा है।

मध्यकालीन शिक्षा का विकास प्राय: मध्यकालीन सभी शासक एकतंत्रीय और स्वेछाचारी थे। इस स्वेछाचारिता का प्रभाव शिक्षा नीति पर भी पडा। शिक्षा के प्रति सभी शासकों की रीति नीति अलग रही जो उनकी मृत्यु के बाद समाप्त हो जाति थी। यदि किसी शासक की शिक्षा के प्रति अधिक रुचि रही तो उनके शासन काल में शिक्षा की पर्याप्त प्रगति होती थी, किन्तु यदि शासक की रुचि शिक्षा के प्रसार में नही होती थी तो शिक्षा की दशा दयनीय होती जाती थी।

इसप्रकार मध्यकालीन शिक्षा पूरी तरह शासक वर्ग की रुचि पर आधारित थी। शिक्षा का महत्व, नैतिक शिक्षा का प्रसार, शिक्षा की प्रगतिशील दिशा का अपना कोई स्वातंत्र्य अस्तित्व नही था। शिक्षा के विकास की दृष्टि से मध्यकालीन शासकों को तीन भागों में बाँट सकते हैं

- वे शासक जिनका उद्देश्य लूटमार करना अथवा विजय प्राप्त करना था जैसे महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, तैमूर और नादिरशाह आदि। इनके शासनकाल में शिक्षा व्यवस्था को अत्यंत क्षति पहुंची।
- वे शासक जो शिक्षित भी थे और शिक्षा प्रेमी भी थे। इनके शासनकाल में शिक्षा के प्रसार के लिए पूरे प्रयास किए गए जैसे रजिया, बलबन, फिरोज तुगलक तथा मुगलकलीन शासक।

- तीसरी श्रेणी में वे शासक थे जो शिक्षा के प्रति उदासीन रहे अर्थात जिन्होंने न तो प्राचीन शिक्षा संस्थाओं को नष्ट किया और न ही शिक्षा के प्रसार में कोई योगदान किया।

मध्यकालीन शिक्षा का विकास तत्कालीन राजनीतिक व सामाजिक स्थिति के आधार पर हुआ। मध्यकालीन शासकों में शिक्षा के उद्देश्यों में एकरूपता नही थी। कुछ शासकों का उद्देश्य हिन्दू शिक्षा और संस्कृति को नष्ट करना तथा उसके स्थान पर इस्लामी शिक्षा और संस्कृति का प्रसार करना था। दूसरी ओर कुछ उदार शासक भी थे जिनका उद्देश्य शिक्षा का प्रसार करना और प्रोत्साहन देना था। मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली के कुछ उद्देश्य थे शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था उसी पर निर्भर थी।
धर्म प्रचार को इस्लाम में पुण्य का कार्य माना गया है। धर्म प्रचारक ही गाजी होता है। धर्म के प्रचार प्रसार के लिए शिक्षा का सहारा लिया गया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्तेक मकतब या मदरसे से लगी हुई मस्जिद अवश्य रहती थी। मकतबों में कुरान की शिक्षा दी जाती थी और इस प्रकार छात्रों को इस्लाम के मूल सिद्धांतों का परिचय दिया जाता था। मदरसों में इस्लामी दर्शन, इस्लामी साहित्य व इस्लाम धर्म की शिक्षा दी जाती थी। इसी धार्मिक भावना से प्रेरित होकर हिन्दू मंदिरों तथा विद्यालयों को नष्ट करके उसके स्थान पर मस्जिद तथा मदरसे बनवाए गए।
मध्यकालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान का प्रसार करना था। हजरत मुहम्मद साहब ने ज्ञान को अमृत बताया है और प्रत्तेक मुसलमान से ज्ञानार्जन की आशा व्यक्त की है " विद्यार्थियों के कलम की स्याही शहीदों के खून से भी अधिक पवित्र है",6 कुरान शरीफ में इस प्रकार की सूक्तियां मिलती हैं। मुस्लिम शासक अपने साथ अपने देश की विशिष्ट नैतिकता भी लाए थे। उनके जीवन सिद्धांत और मूल्य हिंदुओं से भिन्न थे। अत मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य भारतीय छात्रों में मुस्लिम नैतिकता के सिद्धांतों का प्रसार करना था। मुस्लिम शासक अपने साथ कुछ विशिष्ट सामाजिक प्रथाएं, रीति रिवाज, भाषा, संस्कृति और नियम कानून लाए थे। ये अपनी संस्कृति के प्रसार में अत्यधिक रुचि रखते थे। वे शिक्षा के माध्यम से अपनी संस्कृति का प्रचार भारतीयों में करना चाहते थे। शिक्षा के द्वारा जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन करके अपने शासन को सुदृढ़ बनाना चाहते थे। अकबर के शिक्षा संबंधी प्रयास मूलता इन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित थे। मध्यकालीन शिक्षा का उद्देश्य सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त करना था। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती थी जिनसे भावी जीवन में ऐश्वर्य की प्राप्ति हो। शिक्षित व्यक्तियों को ही शासक सिपहसालार, काजी अथवा वजीर नियुक्त करते थे। मदरसों में पढ़ने वाले छात्रों का जीवन सुखमय और विलास प्रिय था। इसी लोभ से हिंदुओं ने अरबी, फारसी पढ़ना प्रारंभ किया।

मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था: मध्यकाल में शिक्षा प्रणाली दो भागों में विभक्त थी। पहली प्रारम्भिक शिक्षा और दूसरी उच्च शिक्षा। प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था मकतबों में तथा उच्च शिक्षा की व्यवस्था मदरसों में की गई थी।
मकतब अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है उसने लिखा अर्थात वह स्थान जहां लिखने पढ़ने की शिक्षा दी जाती है। मकतब मस्जिद से जुड़े होते थे। कभी दृ कभी मौलवियों के घर पर या अन्य स्थानों पर भी मकतब कार्यरत रखते थे। मध्यकाल की प्रारम्भिक शिक्षा संस्था के रूप में मकतब थे। मकतबों की संख्या इतनी कम थी कि सभी मुस्लिम बालक इनमें प्रवेश नही पा सकते थे। मकतबों में हिन्दू बालक भी शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। मकतबों में शिक्षा व्यवस्था निशुल्क थी।
वैदिक और बौद्ध शिक्षा प्रणाली में जिस तरह से उपनयन और पबज़्ज़ा संस्कार होता था, उसी प्रकार मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में मकतब में प्रवेश के समय 'बिस्मिल्लाह' की रस्म होती थी। यह रस्म उस समय सम्पन्न होती थी जब बालक 4 वर्ष, 4 माह और 4 दिन का हो जाता था। इस दिन बालक को नवीन वस्त्र पहनाए जाते थे, सभी संबंधी एकत्र होते थे, इसके बाद मौलवी साहब कुरान की भूमिका एवं उसका 55 वां व 87 अध्याय पढ़ते थे और बालक उसे दोहराता था। यदि बालक दोहराने में असमर्थ होता था तो उससे 'बिस्मिल्लाह' कहलाना ही पर्याप्त होता था। इस रस्म के बाद से बालक की शिक्षा प्रारंभ हो जाती थी और वह मकतब जाने लगता था।

पाठ्यक्रमः मकतब में बालकों को वर्णमाला के अक्षरों का ज्ञान कराया जाता था। लिपि का ज्ञान हो जाने पर कुरान की आयतें कंठस्थ कराई जाती थीं। उच्चारण की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इसके बाद लिखने की शिक्षा दी जाती थी। प्रत्तेक बालक लगभग 4–5 घंटे लेखन कार्य करता था। इसके उपरांत उसे फारसी भाषा तथा फारसी व्याकरण सिखाया जाता था। इसके अतिरिक्त बालकों को अंकगणित, पत्र लेखन तथा बातचीत का ढंग आदि सिखाया जाता था। नैतिक शिक्षा के लिए बालकों को सेख सादी की प्रसिद्ध पुस्तकें गुलिस्ता तथा बोस्ता पढ़ाई जाती थी। शाहजादों की शिक्षा घर पर होती थी और उनका पाठ्यक्रम विशेष प्रकार का होता था। जिसमें अरबी, फारसी, सैनिक शिक्षा, कानून, न्याय तथा इस्लाम धर्म की शिक्षा सम्मिलित होती थी। मकताबों की शिक्षण विधि मौखिक थी। रटने पर विशेष बल दिया जाता था। सम्राट अकबर ने शिक्षण विधि में सुधार करने के लिए एक फर्मान भी जारी किया था। मकताबो के अतिरिक्त खानाकाहों और दरगाहों में भी प्राथमिक शिक्षा दी जाती थी। इनमें केवल मुसलमान बालक ही शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा प्रदान करने का कार्य मौलवी करते थे।

मदरसे: मदरसे उच्च शिक्षा के केंद्र थे। मदरसे आधुनिक महाविद्यालयों के समानार्थी थे। मदरसा शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'दरस' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है भाषण देना। इस प्रकार मदरसा शब्द से अभिप्राय वह स्थान जहां भाषण दिया जाता है। मकतब की शिक्षा समाप्त होने के बाद छात्र मदरसा में प्रवेश लेता है। बड़े मदरसों के साथ पुस्तकालय और छात्रावास जुड़े होते थे। राज्य द्वारा संचालित मदरसों में अध्यापकों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती थीं।

पाठ्यक्रमः मदरसों का पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत था। इसका अध्ययन काल 10–12 वर्ष का था। पाठ्यक्रम प्रमुखता दो प्रकार का था धार्मिक और लौकिक। धार्मिक पाठ्यक्रम में कुरान, मुहम्मद साहब की परंपरा, इस्लामी इतिहास, इस्लामी कानून तथा सूफ़ीमत के प्रमुख सिद्धांत पढ़ाए जाते थे। लौकिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को अरबी फारसी साहित्य एवं व्याकरण दर्शन, तर्क शास्त्र, नीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, कानून, इतिहास भूगोल, गणित, चिकित्साशास्त्र, कृषि और ज्योतिषी आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता था। मदरसों में वास्तुकला, चित्रकला तथा संगीत की उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती थी। यही करण था की मध्यकाल में इन कलाओं का अच्छा विकास हुआ।

किन्तु यह आवश्यक नहीं था की सभी मदरसों में एक समान पाठ्यक्रम पढ़ाया जाए। कुछ मदरसे विशिष्ट विषयों की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे जैसे लाहौर और स्याल कोट 'गणित और ज्योतिषी', रामपुर 'तर्कशास्त्र एवं ज्योतिषी', दिल्ली 'कविता और संगीत' के लिए प्रसिद्ध थे। मकताबों की तरह ही मदरसों की शिक्षण विधि भी मौखिक थी। यहाँ प्रायरू व्याख्यान प्रणाली प्रचलित थी। धर्म, दर्शन, तर्कशास्त्र तथा गणित आदि विषयों के पठन में तर्क प्रणाली अपनाई जाती थी।

हस्तकला तथा संगीत आदि विषयों में प्रायोगिक शिक्षण विधि अपनाई जाती थी। मुस्लिम शासकों के दरबारों में शास्त्रार्थ को विशेष महत्व दिया जाता था। अतरू शास्त्रार्थ प्रणाली भी प्रचलित थी। शिक्षक छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को हल करते थे। कक्षा दृ नायकीय प्रणाली भी प्रचलित थी। शिक्षक की उपस्थिति पर योग्य छात्र दूसरे छात्रों को पढ़ाया करते थे। शिक्षा का माध्यम अरबी फारसी भाषाएं थीं। सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए फारसी का ज्ञान अनिवार्य था, इसी करण कुछ हिन्दू भी फारसी भाषा सीखने लगे थे।

मध्यकालीन विशिष्ट शिक्षाएं: मध्यकालीन समाज में स्त्री की दशा शोचनीय थी। स्त्रियों की शिक्षा पर भी अधिक ध्यान नही दिया गया। समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन था इस करण स्त्रियाँ मदरसे में नही जाती थीं। छोटी आयु की बालिकाएं मकतबों में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर लेती थी। कुछ घरों में भी मकतब संचालित किए जाते थे जहां महिलाओं द्वारा शिक्षा दी जाती थी। मध्यवर्गीय मुस्लिम बालिकाएं इन्हीं गृह मकतबों में जाकर शिक्षा प्राप्त कर लेती थीं।

शाहजादियों की शिक्षा का प्रबंध व्यक्तिगत रूप से महलों में ही किया जाता था। बालिकाओं को धर्मशास्त्र, गृहशास्त्र तथा विभिन्न कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। मध्यकाल में कुछ विदुषी महिलायें भी हुई हैं। रजिया सुल्ताना कुशल शासक थी। बाबर की पुत्री गुलबदन एक सफल लेखिका थी। मुमताज महल, जहांआरा, सुल्तान सलीमा तथा नूरजहां आदि ने साहित्य तथा कला का अध्ययन किया। औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा अरबी फारसी की अच्छी कवियत्री थी।

मध्यकालीन मुस्लिम शासक सैन्य शक्ति के बल पर ही भारत पर सत्तारुढ़ हुए थे। अपने शासन को सुदृढ़ और स्थाई रखने के लिए उन्हें यहाँ के लोगों से लगातार युद्ध करने पड़े। अतरू तत्कालीन काल में सैनिक शिक्षा पर अधिक बल देना अत्यंत स्वाभाविक था। इस काल में सैनिक शिक्षा का पर्याप्त विकास हुआ। राजकुमारों को सैन्य शिक्षा के साथ साथ सैन्य संचालन भी सिखाया जाता था। सैन्य शिक्षा में अश्वारोहण, भाला चलाना, तीर तलवार चलाना, तोप चलाना, तथा किले की घेराबंदी करना आदि सिखाया जाता था।

सैन्य शिक्षा के साथ ही प्रस्तुत युग में औषधि शास्त्र का अच्छा विकास हुआ। चिकित्सा शास्त्र के संस्कृत ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद कराया गया। चिकित्साशास्त्र की अनेक प्रसिद्ध पुस्तकें भी प्रचलन में थी। चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा के लिए रामपुर का मदरसा बहुत प्रसिद्ध था। मध्यकाल में कलाओं की भी व्यापक प्रगति हुई। शासक विलास प्रिय थे। वे अपने महलों और दरबारों की शोभा बढ़ाने के लिए अपार धन व्यय करते थे। इसलिए इस काल में वास्तुकला, चित्रकला, नृत्यकला एवं संगीत कला की अत्यधिक प्रगति हुई। इन कलाओं का प्रशिक्षण व्यक्तिगत आधार पर उस्तादों द्वारा दिया जाता था। कुछ लोग विभिन्न कलाओं में पारंगत व्यक्तियों के घर पर रह कर शिक्षा प्राप्त करते थे।

तत्कालीन काल के मुगल शासन में हस्तकलाओं और ललित कलाओं का अत्यधिक विकास हुआ था। हस्तकलाओं में हाथी दाँत का काम, आभूषण निर्माण, पच्चीकारी, रेशम और जरी का काम, मलमल बुनना, जलयान बनाना, रथ तथा युद्ध सामग्री बनाना आदि हस्तकलाएं प्रचलित थीं। इन शासकों को भवन निर्माण का बड़ा शौक था, इसी कारण वास्तुकला का बहुत विकास हुआ। आगरा का ताजमहल, दिल्ली का लाल किला तथा फतेहपुर सीकरी का बुलंद दरवाजा आदि उस काल की वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। हस्तकलाओं की शिक्षा कारीगरों के घरों अथवा कारखानों में ही दी जाती थी। हस्त कलाएं प्रायरू वंशानुगत होती थीं।

मध्यकालीन शिक्षा की विशेषताएं: मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में अनेक गुण एवं दोष विद्यमान थे। इस्लामी शिक्षा में जहां धार्मिक कट्टरता थी, वहीं दूसरी ओर उसे जीवनोपयोगी बनाने पर भी बल दिया जाता था। मुस्लिम शासकों में अधिकांश

वैभव एवं विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे। मदरसों के पाठ्यक्रम में धार्मिक तथा लौकिक विषयों का समावेश था। लौकिक विषयों के अंतर्गत, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, कृषि तथा चिकित्सा आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा प्रणाली में कुरान के साथ जीवनोपयोगी विषयों को भी सम्मिलित किया गया।

इस्लामी शिक्षा केवल शिक्षा के लिए न होकर जीवन के लिए होती थी। वे जीवन में कर्म को अधिक बल देते थे। इसी उद्देश्य से मुस्लिम राजकुमारों की शिक्षा में सैनिक शिक्षा को विशेष बल दिया जाता था। मध्यकाल में मुसलमान बालकों के लिए शिक्षा अनिवार्य थी। लौकिक व आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टिकोण से शिक्षा का महत्व था। कुरान शरीफ में कहा गया है कि जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है उसी को अल्लाह की भक्ति मिलती है। मुहम्मद साहब के अनुसार भी ज्ञान मनुष्य को अमर कर देता है।

मध्यकालीन शिक्षा के अनुसार विद्या प्राप्ति के लिए चरित्रवान होना आवश्यक था। चरित्रवान विद्यार्थियों को राज्य की ओर से सम्मानित किया जाता था। मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषता थी की शिक्षा निशुल्क दी जाती थी। गुरु और शिष्य के संबंधों में प्रगाढ़ता थी। गुरु और शिष्य के मध्य निकटतम संपर्क थे। शिक्षक प्रततेक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से जानता था। व्यक्तिगत संपर्क का प्रभाव छात्रों की योग्यता, कुशलता तथा प्रतिभा को विकसित करने में विशेष सहायक होता था।

मुस्लिम शासकों के दरबार में विद्वानों को संरक्षण प्राप्त था। इन विद्वानों ने साहित्य एवं इतिहास के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना हुई। रामायण, महाभारत, उपनिषद आदि का फारसी में अनुवाद हुआ। भारत का क्रमबद्ध इतिहास सर्वप्रथम मुस्लिम काल में ही लिखा गया। इस काल के प्रमुख इतिहासकारों में अबुल फजल, बदायूनि फिरिश्ता, जेबुनिशा तथा दाराशिकोंह प्रमुख थे, जिन्होंने इतिहास एवं साहित्य में स्वतंत्र रूप से पुस्तकें लिखी। इस युग में सरस श्रंगारिक साहित्य की भी रचना हुई।

इस काल में शिक्षा को पर्याप्त संरक्षण प्राप्त हुआ। मुस्लिम शासकों और अमीर उमरावों ने मदरसे, मकतब तथा पुस्तकालयों की स्थापना कारवाई। योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृति, तंमगें और सनदें दी जाती थी। शासकों के दरबार में विद्वानों का आदर किया जाता था। मुस्लिम शासन काल में कालों का भी विकास हुआ। कलाओं को शिक्षा में विशेष स्थान प्राप्त था। इस प्रकार मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली में अनेक विशेषताएं थी। शिक्षा व्यावहारिक, चरित्र निर्माण में सहायक थी। शिक्षा में धर्म और लौकिक जीवन का समन्वय था यही नही बल्कि शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत साहित्य, इतिहास एवं विभिन्न कलाओं का समुचित महत्व था।

मध्यकालीन शिक्षा की सीमाएंः मध्यकालीन शिक्षा धार्मिक तो थी, परंतु उसका उद्देश्य धार्मिक कट्टरता को बढ़ाना था आध्यात्मिक विकास करना नहीं। प्राचीन भारतीय शिक्षा के विपरीत मध्यकालीन शिक्षा पूरी तरह से भोगवादी और सांसारिक थी। शिक्षा अनिवार्य अवश्य थी, परंतु वह सार्वजनिक शिक्षा का रूप ग्रहण न कर सकी। अधिकांश मकतब और मदरसे नगरों में ही स्थित थे जहां केवल उच्च एवं मध्य वर्ग के लोग ही शिक्षा का लाभ उठा सकें। ग्रामीण तथा साधारण जनता को शिक्षा का सम्पूर्ण लाभ नही मिला। दूसरे धार्मिक कट्टरता के कारण अधिकांश हिन्दू जनता इसका लाभ न उठा सकी।

शिक्षा का माध्यम अरबी फारसी होने के कारण सामान्य मुसलमान भी इस शिक्षा से लाभान्वित न हो सके। इस प्रकार मुस्लिम शिक्षा में सार्वजनिकता का अभाव था। मध्यकालीन शिक्षा शासकों और धनी लोगों की सहायता पर चलती थी। शासन परिवर्तन के साथ शिक्षा संस्थाएं भी प्रभावित होती थीं। शासन से सहायता मिलना बंद हो जाने पर प्रायरू मकतब दृ मदरसे बंद हो जाते थे। वास्तव में मढ़कलीं शिक्षा में शिक्षा की कोई स्थिर नीति नही थी।

पर्दा प्रथा के कारण महिलायें, पुरुषों के साथ मकतबों में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकती थीं। राजघराने की बालिकाओं के लिए शिक्षा का प्रबंध घर पर ही होता था, परंतु साधारण परिवार की महिलाओं के लिए शिक्षा का कोई प्रबंध न था। इस प्रकार मध्यकाल में सर्व साधारण घराने की बालिकाओं के लिए शिक्षा का कोई प्रबंध नही था। मकतब और मदरसों में शिक्षा का माध्यम अरबी और फारसी भाषाएं थीं, अतरू यह हिन्दू व मुसलमानों दोनों के लिए कठिन था। प्रांतीय भाषाएं जो जन साधारण में प्रचलित थीं, उनके विकास की ओर कोई ध्यान नही दिया गया।

मध्यकाल में मदरसों से जुड़े छात्रावासों में सारे सुख साधन उपलब्ध थे अतरू छात्रों का जीवन विलास प्रिय हो गया था। उनमें परिश्रम, स्वावलंबन, आत्मनियंत्रण आदि गुणों का अभाव था। मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली में दंड व्यवस्था बहुत कठोर थी। शिक्षण पद्धति में विषयों को रटने पर अधिक बल दिया जाता था। बिना समझे हुए विषय को रटने से विद्यार्थी की स्मरण शक्ति भले ही बढ़ती रही हो परंतु उनमें चिंतन, मनन एवं तर्क करने की शक्ति अवरुद्ध हो जाती है।

मध्यकालीन शिक्षा केंद्रः भारत में मध्यकालीन शिक्षा व मुस्लिम शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र आगरा, दिल्ली, लाहौर, स्याल कोट, मुल्तान, जालंधर, मालवा, अजमेर, गुजरात, अहमदनगर, हैदराबाद, गोलकुंडा, खानदेश, बीजापुर, जौनपुर, रामपुर, देवबंद, फीरोजाबाद और लखनऊ थे। इसके अतिरिक्त किसी शासक की राजधानी, अमीर या सूबेदार का निवास स्थान अथवा जहां पर कोई खानकाह या दरगाह होती थी, वह स्थान शिक्षा का केंद्र बन गया। अपनी धार्मिक कट्टरता के कारण मुस्लिम शासकों ने नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि महान शिक्षा केंद्रों को नष्ट कर दिया।

संक्षेप में यदि कहा जाए कि मध्यकालीन शिक्षा का संख्यात्मक और गुणात्मक विकास अवरुद्ध रहा। तो अनुचित ना होगा, फिर भी यह मानना पड़ेगा कि मध्यकालीन शिक्षा प्राचीन काल के समान महान भले ही न रही हो, परंतु उसने भारतीय जनसाधारण को सैकड़ों वर्षों तक शिक्षित करने का कार्य किया। उसने मुस्लिम संप्रदाय को एक सूत्र में पिरोये रखा और न केवल मुस्लिम संस्कृति को जीवित रखा वरन् उसका विस्तार भी किया।

संदर्भ

1. भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं, डॉ. एल. बी. बाजपेयी तथा डॉ. मालती सारस्वत, प्रकाशन आलोक प्रकाशन 165/ 64 कच्चा हाता, अमीनाबाद लखनऊ, प्रथम संस्करण 1994
2. रीतिकाव्य की भूमिका, डॉ. नगेन्द्र, स्मृति प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1968 ई.
3. रीतिकाव्य की भूमिका, डॉ. नगेन्द्र, स्मृति प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1968 ई.
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रथम भाग, डॉ. राजबली पाण्डेय, प्रेम प्रकाशन मंदिर दिल्ली , संस्करण 1988
5. हिन्दी साहित्य, डॉ. श्याम सुंदरदास, कपूर ग्रंथ अकादमी 1686 पुराना दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण 2001
6. भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याएं, डॉ. एल. बी. बाजपेयी तथा डॉ. मालती सारस्वत, प्रकाशन आलोक प्रकाशन 165/ 64 कच्चा हाता, अमीनाबाद लखनऊ, प्रथम संस्करण 1994
7. भारतीय शिक्षा का इतिहास, प्यारे लाल रावत, आगरा रामप्रसाद एंड संस, संस्करण 1986
8. शिक्षा दर्शन, पंडित सीता राम चतुर्वेदी, वीरेंद्र नाथ घोषा, माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद
9. एजुकेशन इन इंडियारू टुडे एण्ड टुमारो, बड़ौदा आचार्य बुक डिपो मुखर्जी
10. पूर्व मध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय, भारती भंडार प्रयाग, प्रथम संस्करण 2001
11. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, डॉ यूसुफ हुसैन, भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ़
12. मध्ययुगीन भारत, अवध बिहारी पाण्डेय, सेंट्रल बुक डिपो इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1967
13. मध्यकालीन भारत, डॉ बी. डी. महाजन, एस. चंद्र एण्ड कंपनी लिमिटेड, मुख्य कार्यालय राम नगर नई दिल्ली, नवां संस्करण 1990
14. मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण, इन्द्र विद्या वाचस्पति भाग पहला, दूसरा संस्करण 1949 ई., हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, चिरगांव बंबई 4